P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-10* June- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जहां में मुख़्तलिफ़ राजस्थानी लहरिया

सारांश

मानव सभ्यता के विकास के साथ ही विश्व में कई ऐसी कलाओं ने जन्म लिया जिनके द्वारा मानवीय जीवन सुलभ और सौन्दर्यपूर्ण हो गया। मानव की मूलभूत आवश्यकताओं रोटी, कपड़ा और मकान में से कपड़ा या वस्त्र में इस बात का प्रमाण स्पष्ट दिखाई देता है। मानव ने अपने शरीर को ढकने, गर्म रखने, निजी श्रृंगार के लिए तथा अपनी सम्पन्नता के प्रदर्शन के लिए भी विभिन्न प्रकार के वस्त्रों का प्रयोग किया। भारतीय कला एवं संस्कृति विश्व में अपने मूल्यों एवं सौन्दर्य निरूपण के लिए विख्यात है। यहाँ वैदिक पौराणिक काल से ही वस्त्रों को विभिन्न अवसरों, धार्मिक अनुष्ठानों में महत्व दिया गया है। सुप्रसिद्ध आयुर्वेदज महर्षि चरक के मतानुसार –

'काम्यं यशस्यामायुष्मलक्ष्मीध्नं प्रहर्षणम्।
श्रीमत्यपरिषदं शस्त्रं निर्मलाम्बरधारणम्।।

अर्थात् निर्मल वस्त्रों को धारण करना कमनीय, यशोदायक, आयुवर्धक दरिद्रनाशक, हर्षवर्धक तथा सज्जनों एवं श्रीमान् लोगों की सभा में प्रशस्त होता है। राजस्थान में भी विभिन्न अवसरों पर वस्त्र विशेष को धारण करने की परम्परा रही है। मांगलिक कार्यों पर लहरिया, मोठड़ा, फागण्या, पोमचा, पीला, चुनरी, साफा आदि राजस्थानी वेश का सौंदर्यपूर्ण तत्व है। ये वस्त्र अलंकरण में राजस्थान की स्पष्ट छटा बिखेरते हैं। पचरंगा लहरिया हो या पीले रंग की चुनरी पर गुलाबी लाल रंग में रंगा पोमचा, मोठड़ा हो या सतरंगी साफा राजस्थान की शान को बयां करते हैं। इन कला नमूनों को बनाने में हस्त कौशल की महती आवश्यकता होती है जो यहाँ पर बहुतायत में है। 'टाय एण्ड डाई' विधि से निर्मित इन वस्त्रों को कलात्मक रूप देने में मुस्लिम कलाकार अपने पूर्वजों के समय से वर्तमान तक कार्यरत है। जयपुर, अलवर, जोधपुर आदि जिलों में मुस्लिम रंगरेजों एवं नीलगरों ने इस विधा को चरम पर पहुँचाया जिससे सम्पूर्ण विश्व भी चकित है। यहां कलाकार के घरों में प्रत्येक सदस्य इस कलात्मक कार्य में लिप्त दिखाई देता है। अपने रचनात्मक ज्ञान एवं संयोजन प्रतिभा से लहरिया को बेहद अलंकृत स्वरूप प्रदान किया गया है। जिससे राजस्थान का लहरिया सम्पूर्ण विश्व में जुदा है, अद्वितीय है।

ज्योति कुमावत
शोधार्थी,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

मुख्य शब्द : मानव सभ्यता, राजस्थान का लहरिय

प्रस्तावना

मानव सभ्यता का इतिहास सुदूर अतीत में फैला हुआ है। अकेले मानव जाति में बुद्धि के विकास के साथ–साथ संस्कृति का उदय और विकास हुआ है। मानव ने शिकार के लिए हथियार बनाए, अग्नि का उपयोग किया, सामूहिक और फिर सामाजिक जीवन सभ्यता की तथा कला, धर्म, कृषि आदि की स्थापना की। साथ ही वाणी केन्द्रों के विकसित हो जाने पर मानव ने अक्षरबद्ध भाषा बनाई और लिखने व पढ़ने की क्षमता, शिक्षा तथा विज्ञान का विकास किया।[1] इसी प्राचीन काल से मानव ने अपने शरीर को ढकने, गर्म रखने, नीजी श्रृंगार के लिए तथा अपनी सम्पन्नता के प्रदर्शन के लिए भी विभिन्न प्रकार के वस्त्रों का प्रयोग किया है।[2]

मानव की मूलभूत आवश्यकताएं है रोटी, कपड़ा और मकान। लेकिन अब ये वस्त्र सिर्फ मूलभूत आवश्यकताओं का ही अंग न रहकर उससे ऊपर उठ चुके हैं। वस्त्रों का अब सामाजिक संसार में कलात्मक महिमा मण्डन हो गया है। अपने शरीर को आभूषणों और अलंकरणों से सुशोभित करना मानव की प्रवृति रही है। वस्त्रों से ही मानव की समाज, देशकाल वर्ण जाति, समुदाय और सम्प्रदाय आदि में पहचान बनती है। भारत वर्ष में प्राचीन काल से ही रंगाई और छपाई कला का कार्य होता आ रहा है। यहाँ के रंगे, छपे एवं कढ़े वस्त्रों का ईसा पूर्व से ही विदेशों को निर्यात होता था तथा ये अपनी विशिष्टता के कारण अन्य देशों से उत्कृष्ट मान जाते थे।[3]

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-10* June- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय कला एवं संस्कृति प्रारम्भ से ही भव्य और वैभवपूर्ण रही है। यहाँ वैदिक पौराणिक काल से ही वस्त्रों को विभिन्न अवसरों, धार्मिक अनुष्ठानों में महत्व दिया गया है। सुप्रसिद्ध आयुर्वेदज महर्षि चरक के मतानुसार –

'काम्यं यशस्यामायुष्मलक्ष्मीध्नं प्रहर्षणम्।
श्रीमत्यपरिषदं शस्त्रं निर्मलाम्बरधारणम्।।

अर्थात् निर्मल वस्त्रों को धारण करना कमनीय यशोदायक,आयुवर्धक, दरिद्रनाशक, हर्षवर्धक तथा सज्जनों एवं श्रीमान् लोगों की सभा में प्रशस्त होता है।[4]

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य राजस्थान की प्रसिद्ध ''टाय एण्ड डाई'' (वस्त्र रंगाई विधि) के कलात्मक पक्ष को उजागर करते हुए उसके प्रमुख कलाकारों का योगदान भुनाना है। विशेष तौर पर मुस्लिम कलाकारों द्वारा अपनाई गई इस विधा का लोहा जग मानता है। परन्तु उन कलाकारों को कोई नहीं जानता है। उन्हीं का नामोल्लेख यहाँ किया जाएगा।

साहित्यावलोकन

भारत एक कृषि प्रधान देश है तथा कृषि के बाद सबसे बड़ा उद्योग वस्त्र निर्माण का ही है, इसलिए वस्त्रों की बुनाई कार्य देश के विभिन्न स्थानों पर होता रहा है। भारत की जनसंख्या भी विश्व में दूसरे स्थान पर है। इसलिए यहाँ पर वस्त्रों की आवश्यकता भी ज्यादा पड़ती है। भारत के विभिन्न राज्यों की अपनी अलग भाषा वेशभूषा एवं भौगोलिक परिस्थितियाँ है। जिनका प्रभाव चलन एवं आवश्यकताएँ भी भिन्न–भिन्न है। (डॉ. के.एन. श्रीवास्तव, डॉ. मीनाक्षी गुप्ता : परम्परागत भारतीय वस्त्र, 2018, पृ. 2) जयपुर अजमेर (राजस्थान) मार्ग में जयपुर से लगभग 80 किमी. दूर बगरू गांव (तहसील सांगानेर) स्थित है। जहाँ सरल तकनीक हाथ के ठप्पों द्वारा सूती वस्त्रों पर छपाई की जाती है। इस पारम्परिक छपाई की विशेषता किनार एवं बूटियाँ होती है। जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है। इस छपाई को स्थान ग्राम ''बगरू'' के नाम से सम्बोधित किया जाता है। (डॉ. हृदय गुप्त : देशज कला, 2018, पृ.165) जयपुर में जालुपुरा और रामगंज में बँधेज रंगाई का प्रमुख केन्द्र है। यहाँ मुसलमानों का मोहल्ला है। जहाँ घर–घर स्त्रियाँ कपड़े बाँधती हुई दिखाई देंगी। इनको नीलगरों या रंगरेजों द्वारा गेरू से छपे हुए कपड़े मिलते है। (डॉ. मीनाक्षी गुप्ता : भारतीय वस्त्र कला, 2016, पृ. 149)

उपर्युक्त रचनाओं और ऐसे ही कई साहित्य ग्रन्थों के अध्ययन से हमें राजस्थान में टाय एण्ड डाई विधि से निर्मित बँधेज एवं लहरिया जैसे वस्त्रों के ऐतिहासिक एवं तकनीकी पक्ष का तो ज्ञान होता है परन्तु शायद ही कोई ऐसा अध्ययन किया गया है। जिसमें इस विधा में कार्य करने वाले मुस्लिम कलाकारों के बारे में जानकारी प्राप्त हो सके। इस शोध पत्र में रंगाई, छपाई कार्य में संलग्न मुस्लिम कलाकारों के नामोल्लेख एवं संक्षिप्त परिचय देने का प्रयास किया गया है।

सामाजिक सुअवसरों पर नूतन निर्मल अलंकरणों युक्त वस्त्र धारण करना भारतीय परम्परा का एक अभिन्न अंग है। इन वस्त्रों को शोभनीय बनाने के लिए उन पर रंगों और कढ़ाई द्वारा अलंकरण किया जाता है। रंगों के प्रति मानव प्रारम्भ से ही अनुरागी रहा है। वस्त्रों पर ये रंगों द्वारा ज्यामितीय परिसज्जा अतिशोभनीय एवं कलात्मकता के परिचायक है। अनेकता में एकता की विशेषता लिये भारतीय सभ्यता विश्व में अपनी अलग पहचान रखती है। इसी विशेषता की रंगत हमें यहां के वस्त्र संस्कारों में दिखाई देती है। भारत देश के विभिन्न राज्यों की अपनी अलग वस्त्र विशेषता है। प्रत्येक क्षेत्र ने अपनी मौलिक वस्त्र निर्माण धाराएं प्रवाहित की है जो भारतीय परम्परागत वस्त्र सरिता को परिपूर्ण करती है। प्रत्येक राज्य में बुनाई, रंगाई, छपाई, कढ़ाई की अलग शैली है जिनमें से कुछ विश्वविख्यात कला प्रमाण है। यथाः हिमाचल प्रदेश के चम्बा रूमाल, पंजाब की फुलकारी, गुजरात की कढ़ाई, उत्तरप्रदेश के लखनऊ की चिकनकारी, राजस्थान में उदयपुर के आकोला, जयपुर के सांगानेरी और दाबू, बातिक छपाई, लहरिया, कोटा डोरिया आन्ध्रप्रदेश की कलमकारी, बिहार की मिथिला, उड़ीसा के पट्ट चित्र, कश्मीर की पशमीना, कोलकाता की सिल्क, ब्रोकेड साड़िया।

भारत देश का सर्वाधिक विविध रंगों वाला प्रदेश है राजस्थान जहाँ रंगों की ऊर्जा जीवन में नवीन उमंग, उत्साह और गति का प्रवाह कर देती है। राजस्थान में हस्तशिल्प कला ने नवीन आयाम प्राप्त किये हैं। यहाँ की रंगाई, छपाई, बुनाई एवं कढ़ाई युक्त वस्त्र जग में शुमार है। ये परम्परागत शैलियां आज के दौर में फैशन को एक स्वदेशी स्पर्श देती है। देश–विदेश के बहुत से वस्त्र निर्माता इनसे प्रेरणा लेते। यहां आकर वे इन वस्त्र निर्माण शैलियों की बारीकियाँ जानते हैं। हस्तलाघवपूर्ण ये कलाएं प्रदेश के कलाकारों को वैश्विक मंच प्रदान कर रही है। ये उन्हें आर्थिक रूप से भी सम्पन्न कर रही है।

म्हांने लाइदो बाईसा रा बीरा लहरिया सो।
म्हांने लईदी लर्ददो राज लहरियो सा।
महारा लहरिया ना नौ सा रौकड़ा सा।
म्हांने लइदो बाईसा रा बीरा लहरिया सा।

इस लोक गीत में नायिका अपने नायक (बीरा) से नो सौ रूपये वाला लहरिया लाने के लिए अनुरोध कर रही है।[5] राजस्थान में त्योहारों एवं घर में मंगल अवसरों पर महिलाओं द्वारा विभिन्न ओढ़नियां, चुनरियां पहनी जाती है। श्रावण, भादों में पचरंगी लहरिया, बारह–मासा, चुनड़ी, माघ में बसन्ती, ब्याह शादी विभिन्न ऋतुओं और शुभ अवसरों पर ओढ़ी जाने वाली चुनरियों की डिजाइन अलग–अलग ही होती है, त्रिबूंदी, पीला, मोठड़ा, लाडू–जलेबी, पोमचा, सतरंगी चुनरी, पतंगा, चौखाना, धनक बेल आदि।[6]

पचरंगी साफा

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-10* June- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

इन वस्त्रों के निर्माण के लिए राजस्थान में 'टाय एण्ड डाई' की विधा अपनायी जाती है जिसे हिन्दी में सामान्यतः बाँधनी या बँधेज कहा जाता है। राजस्थान में टाय एण्ड डाई से वस्त्र परिसज्जा के केन्द्र जयपुर, जोधपुर, अलवर, बीकानेर आदि जिलों में है। जयपुर के महाराज सवाइ सिंह ने सन् 1770 में यहां पर 'रंगखाना' स्थापित करवाया था जिसमें बंधेज का उत्कृष्ट कार्य किया जाता था। बाँधनी वस्त्र तैयार करने के लिए सर्वप्रथम डिजाइनानुसार बुँदकी बनाकर, मोमयुक्त धागे से बांध देते हैं। यह बुँदकी नाखून, कील, दाल, चने, मटर, बीज, मोती, कौड़ी, कांच की गोली एवं माचिस की तीली आदि से बनायी जाती है इसमें धागे को बिना तोड़े प्रत्येक बिन्दु पर बाँधते जाते हैं। इस प्रक्रिया से बँधे स्थान पर रंगाई के समय रंग नहीं चढ़ता तथा शेष वस्त्र रंगीन हो जाता है। यहाँ धागा अवरोधक का कार्य करता है। सर्वप्रथम यदि बिन्दु श्वेत रखने हैं तो उस स्थान पर धागा डिजाइनानुसार बाँधकर वस्त्र को रंग देते हैं। तत्पश्चात् रंगी हुई पृष्ठभूमि की बुंदकी यदि रखनी है तो पुनः धागा डिजाइनानुसार बांधते हैं। यह क्रम जितने रंग की बुँदकियां व डिजाइन बनाना हो क्रमानुसार वस्त्र को रंगते जाते हैं। यहाँ यह आवश्यक है कि बाँधनी को सर्वप्रथम हल्के रंग से तद्उपरान्त उससे गहरे फिर और गहरे रंग से रगते है। बाँधनी पर रंगाई कार्य ब्रेथाल अथवा नेपथाल रंगों के प्रयोग से किया जाता है। इन रंगों से रंगने पर वस्त्र प्रायः पक्के रंग के हो जाते है रंगते समय इस रंग के साथ नमक एवं कपड़े धोने के सोडे को मिलाया जाता है। जिससे वस्त्र की गन्दगी व चिकनाई साफ हो जाती है तथा वस्त्रों में चमक आ जाती है।[7]

रंगने से पूर्व बँधेज

पोमचा, फागण्या, मोठड़ा, लहरिया ये सभी बेहद महत्वपूर्ण टाय एण्ड डाई अलंकरणों के नाम है जो राजस्थानी महिलाओं को वेशभूषा के अभिन्न अंग है। पोमचा मे पोम शब्द पद्म (कमल) का अपभ्रंश है। इस ओढ़नी में पीले रंग की पृष्ठभूमि पर गुलाबी या लाल रंग के कमल रूप आकार होते है। फागण्या सूती वस्त्र पर तीरछी धारियाँ रंगी होती है। जिसकी किनारी पर गोटे और गोखरू का उपयोग किया जाता है। जब रंगी ये धारियाँ एक दूसरे को काटती है तो उससे निर्मित अलंकरण को 'मोठड़ा' कहते है। इन सभी अलंकरणों में सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं लहरिया। लहरिया बाँधने के लिए सर्वप्रथम कपड़े के विकर्ण था तिरछे कोनों को खींचकर बांध लगाया जाता है। बाँधते समय कपड़े में रस्सी की तरह बल (बट) दिया जाता है। फिर इसे बीच–बीच में से धागे से डिजाइन के अनुसार के अनुसार बाँधा जाता है। फिर मनचाहे रंग में रंग लिया जाता है। रंगे हुये कपड़े को पीटा जाता है। जिससे रंग अन्दर तक पहुँच सके। रंगाई प्रक्रिया के लिए एक साथ कई रंग के घोल में डिजाइन के अनुसार रंगाई की जाती है। फिर सूखने पर इसे खोला जाता है। खुलनग पर कपड़े पर तिरछी रेखाओं की डिजाइन अनेक रंगों में दिखाई देती है, जिसे दुरंगी लहरिया, तिरंगी लहरिया, पचरंगा लहरिया, सतरंगी लहरिया इत्यादि कहा जाता है। पचरंगी लहरिया में पहले गुलाबी रंग फिर लाल, नारंगी और हरा रंग में रंगा जाता है।[8] वस्त्र रंगना आसान है लेकिन बाँधकर अलंकरण बनाना उतना ही मुश्किल है।

रंगने के बाद लहरिया

भारत ही नहीं विदेशों में भी पसन्द किये जाने वाले इन लहरियों को निर्मित करने वाले कालाकार राजस्थान में बहुत है। विशेष तौर पर मुस्लिम समाज से ताल्लुक रखने वाले रंगरेज और नीलगर ये कार्य अपने पुर्वजों के जमाने से करते आ रहे है। यह उनका पुश्तैनी कार्य है। प्रारम्भ में भारत में नील की खेती होती थी इस खेती में संलग्न एवं इससे रंगाई का कार्य करने वालों को नीलगर कहते है। एक दूसरे अर्थ में इन्हें नीलगर इसलिए भी कहते थे क्योंकि इनके घरों में कुएं हुआ करते थे जिसके पानी से ये नील रंगाई करते थे। शाम और सुबह रंगाई का काम होता था और दोपहर में उसी कुएँ पर लकड़ी का पट्टा डालकर आराम कर लिया जाता था।[9] लहरिये बनाने के लिए, सूती, चिनॉन, शिफॉन, रेशम, सिल्क आदि वस्त्रों का उपयोग होता है। मुगल पठानों के घराने से निकले बादशाह मियां अपने द्वारा निर्मित लहरियों से टाय एण्ड डाई की कला को अगले स्तर पर पहुँचा रहे है। प्राकृतिक रंजकों के साथ लहरिया टाय एण्ड डाई शिल्प में अद्वितीय योगदान के लिए राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी से सम्मानित हो चुके शिल्प गुरू बादशाह मियां जहाँ देश विदेश में अपनी कला के बल पर टोंक

का नाम रोशन कर रहे है, वहीं भारत की विरासत को भी बढ़ावा देते नज़र आ रहे है।[10] 12 दिसम्बर, 2004–05 में नगिना–मोठड़ा सिल्क की साड़ी जिसमें 32 रंग थे पर इन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुका है।[11] इनके पुत्र शहनशाह आलम को भी मास्टर क्राफ्ट्समेन स्टेट अवार्ड प्राप्त हो चुका है।

बादशाह मियां अपनी एक कृति के साथ

इससे पूर्व 1986–87 में राजस्थान सरकार द्वारा जयपुर में रामगंज बाजार में अस्सी वर्षीय बुजुर्ग श्री मोहम्मद सिद्दकी को हस्तशिल्प कला क्षेत्र में बँधेज के विशिष्ट कार्य हेतु राज्य स्तरीय पुरस्कार रूपये 5000/– अंगवस्त्र एवं ताम्रपत्र द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। उनके दो पुत्रों क्रमशः मोहम्मद रमजान तथा मोहम्मद फरीद को भी श्रेष्ठ बँधेज कार्य हेतु राज्य सरकार द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।[12] मोहम्मद सिद्दकी (जयपुर), यासीन रंगरेज (जयपुर),गय्युर अहमद (जयपुर), अब्दुल गनी (जयपुर), मोहम्मद सिद्दकी (सीकर), शौकत अली, हाज़रा बेगम (टोंक), मेहबूब अली (सीकर), गुलाम मोहम्मद चाडवा (बीकानेर),नज़र मोहम्मद(जोधपुर), हाफिज मोहम्मद मुबारिक (चुरू), हाफिज मोहम्मद आयुब (चुरू), हाजी मोहम्मद युसुफ (चुरू),नाजी मोहम्मद आदि।[13] ऐसे मुस्लिम कलाकार है जिन्होंने टाय एण्ड डाई की कला में अपूर्व योगदान दिया जिससे जहां में मुख़्तलिफ़ है राजस्थानी लहरिया।

निष्कर्ष

समुचित अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि मुस्लिम कलाकार अपनी इस कला विधा को बनाये रखने के लिए निरन्तर संघर्षरत है। उन्हें राज्य स्तरीय एवं राष्ट्रीय स्तरीय सम्मान तो प्राप्त हुए परन्तु एक बहुत बड़ा तबका अभी–भी कारीगरी की तंग गलियों के अँधेरे में है। उन्हें प्रकाश में लाना ही इस शोध का प्रमुख लक्ष्य है। मुस्लिम कलाकारों को वह ध्यानाकर्षण नहीं मिल रहा है जिसके वह हकदार है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *सिंह,डॉ. ममताःभारतीय चित्रकला का इतिहासः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2017,पृ. 34*
2. *पोटर, एम. डेविड कोर्बमैन, बुर्नार्ड पी. : वस्त्र उद्योग : तन्तु से वस्त्र, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, 1976,पृ. 1*
3. *गुप्ता, डॉ. मिनाक्षी : भारतीय वस्त्र कला, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2016, पृ. 5*
4. *वही; पृ. 145*
5. *वही; पृ. 152*
6. *वही; पृ. 151*
7. *गुप्त, डॉ. हृदय : देशज कला, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2018, पृ. 166*
8. *गुप्ता, डॉ. मिनाक्षी : भारतीय वस्त्र कला, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2016, पृ. 153*
9. *बादशाह मियां द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार।*
10. *असलम, एम. : विदेश में शिल्प गुरू फैला रहे हैं रंगों की छठा (टोंक ऑस्कर में प्रकाशित लेख)*
11. *बादशाह मियां द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार।*
12. *माथुर, कमलेश : हस्तशिल्प कला के विविध आयाम पंचशील प्रकाशन, जयपुर,1997, पृ. 35*
13. *www.handicraft.ac.in*